श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के पूर्वोत्तर क्षेत्र का संयुक्त आंचलिक सम्मेन के उद्घाटन समारोह पर माननीय राज्यपाल का अभिभाषण

दिनांक 18 जून 2023, रविवार	समय : 11:00 AM	स्थान : समता भवन , गुवाहाटी

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गौतम जैन,

राष्ट्रीय महामंत्री श्री निश्चल कंकारिया,

श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, गुवाहाटी के अध्यक्ष श्री जीवराज पींचा जी,

मंत्री श्री धनराज बोथरा जी,

संघ के राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय पदाधिकारीगण,

उपस्थित अन्य अतिथिगण,

देवियों और सज्जनों,

नमस्कार!

संगठन के पूर्वोत्तर क्षेत्र के संयुक्त आंचलिक सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर आप सबके बीच उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है।

संघ मार्गदर्शन के अनुरूप धर्म प्रभावना में सेवारत रहते हुए, समाजोत्थान में अनवरत रूप से योगदान करती आ रही है। संघ को स्वाध्याय, साधना व संयम का समागम तथा राम धाकरे पापा अनुशासन व अध्यात्म का पर्याय कहा जाता है। संघ अपनी 450 से अधिक स्थानीय इकाइयों व शाखाओं विदेश में और स्थापित केन्द्रों द्वारा अपनी दो अंतर्गत संस्थाओं, महिला समिति एवं समता युवा संघ के सम्बल से, अनेकानेक

धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, लोकोपकारी प्रवृत्तियों का संचालन कर समाज में अध्यात्म के नवजागरण का जयघोष कर रहा है।

साधुमार्गी संघ की विकास यात्रा

विगत 60 वर्षों में संघ ने विस्तृत पैमाने पर आध्यात्मिक, सामाजिक, चिकित्सकीय आदि क्षेत्रों में कार्य किये हैं। संस्थापना के साथ प्रारंभ संघ की विकास की यात्रा अविराम आज भी जारी है। धर्म

समर्पित इस संगठित व संस्कारित समूह की सक्रियता अतुलनीय है। प्रथम कार्यकारिणी का गठन संघ की प्रथम अखिल भारतीय कार्यकारिणी भीनासर निवासी श्री छगनलाल जी बैद की अध्यक्षता में गठित हुई तथा श्री जुगराज जी सेठिया, बीकानेर को मंत्री का दायित्व दिया गया।

श्रमणोपासक: संस्थापना के दिन ही श्रमणोपासक' के नाम से मुखपत्र प्रकाशित करने का निर्णय किया गया और प्रथम संपादक श्री जुगराज जी सेठिया को नियुक्त किया गया। तब से लेकर आज तक श्रमणोपासक संघ गतिविधियों को जन-जन तक पहुंचाने का सबसे लोकप्रिय माध्यम बना हुआ है । यह धर्म जागरण, गुरु भगवन् के प्रवचनों और समाज की गतिविधियों के संचार का माध्यम है। 'श्रमणोपासक 25000 सदस्यों के माध्यम से लगभग 1 लाख पाठकों को संघ-समाज-धर्म से जोड़ने में अहम भूमिका निभा रहा है।

> विविध प्रवृत्तियों का शुभारंभ : संघ के प्रथम अधिवेशन में ही नैतिकता से ओत-प्रोत साहित्य सृजन कर घर-घर पहुंचाने, धार्मिक संगठन, स्वधर्मी सहयोग और जीवदया जैसी प्रवृत्तियों की नींव रखी गयी। संघ ने सामाजिक समता की स्थापना के लिए विद्यार्थियों हेतु शिक्षण सामग्री-छात्रवृत्ति, बेरोजगारों के लिए स्वावलंबन, शिक्षा, चिकित्सा,

दानपेटी, स्वाध्यायी विकास कार्यक्रम, विद्वत निर्माण प्रकल्प, समता मिति, गौशाला में सहयोग आदि अनगिनत सेवाकार्यों का

शुभारंभ किया।

श्री गणेश जैन छात्रावास : संघ स्थापना के मात्र चार माह पश्चात् ही आचार्य श्री गणेशलाल जी म सा. का देवलोकगमन हो गया। महाप्रयाण से पूर्व वे 3-4 वर्षों के लिए उदयपुर में विराजे थे। उनकी स्मृतियों को अक्षुण्ण रखने के उद्देश्य से उदयपुर में सुन्दरवास में मुख्य राजमार्ग पर बीघा जमीन क्रय कर कालांतर में श्री गणेश जैन छात्रावास की स्थापना की गई जो आज आधुनिक सुविधायुक्त एक आदर्श शिक्षा संस्कार केन्द्र बन चुका है।

धर्मपाल प्रचार-प्रसार प्रवृत्ति: नागदा और उसके आस-पास निवासित बलाई

राम चमकते भानु समाना

जाति के 17 हजार लोगों ने आचार्य श्री नानेश की अमृतवाणी से प्रभावित होकर सप्त- कुव्यसन त्याग करने की प्रतिज्ञा की । आचार्य श्री ने इन बलाइयों को 'धर्मपाल' का नाम दिया और उत्तम जीवन जीने की प्रतिज्ञा दिलाई। धर्मपाल क्रांति आज शिक्षा, संस्कार, स्वावलंबन और व्यसनमुक्ति का एक कीर्ति स्तम्भ बन चुका है। संघ ने धर्मपाल प्रचार-प्रसार समिति का

गठन कर इसे अनुपम विस्तार दिया।

श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार, रतलाम: देशभर में बिखरे संदर्भ ग्रंथों के संकलन एवं संरक्षण के उद्देश्य से रतलाम में श्री गणेश जैन ज्ञान भण्डार की स्थापना की गई। ज्ञान भण्डार आज विद्या और शोध की अग्रगण्य संस्था है।

साहित्य प्रकाशन समिति : संघ प्रवृत्तियों की विस्तार की कड़ी में श्री गुमानमल जी चौरड़िया के संयोजन में साहित्य प्रकाशन समिति की स्थापना

की गई। यह समिति उत्कृष्ट साहित्य का प्रकाशन कर जन-जन को उपलब्ध करवाती है।

संघ पुरस्कार : संघ द्वारा साहित्य के प्रोत्साहन के लिए 'स्व. श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार', उच्च प्रशासनिक सेवाओं में विशेष ख्याति अर्जित करने पर 'स्व. श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार', समता, दर्शन और व्यवहार से सुशोभित व्यक्तित्व के लिए 'आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार' तथा जन सेवा में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली संस्था अथवा व्यक्ति हेतु 'आचार्य श्री नानेश जनसेवा' पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इन पुरस्कारों का उद्देश्य समाज की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित कर उनके योगदान से जन मानस को लाभान्वित करना है। श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति : समाज में महिला शक्ति को सृजनात्मक कार्यों से जोड़ने, उनमें जागृति एवं प्रेरणा का संचार करने के लिए 8 अक्टूबर 1967 (वि.सं. 2023) को श्रीमती आनन्दकंवरजी पितलिया के नेतृत्व में श्री अ.भा. सा. जैन महिला समिति का गठन हुआ। वर्तमान में 281 महिला मंडल व 59 प्रतिनिधिमंडल शाखाएं महिला समिति के अंतर्गत उत्कृष्ट धर्म प्रभावना कर रही हैं और 15000 से अधिक आजीवन सदस्याएं बन चुकी हैं।

श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ : समाज की युवा शक्ति को स्व-पर कल्याण की साधना, दिशा बोध और सृजनात्मक कार्यों से जोड़ने के लिए 4 अक्टूबर 1979 को श्री हंसराजजी सुखलेचा के नेतृत्व में श्री अ.भा. सा. जैन समता युवा संघ की नींव रखी गई। वर्तमान में कुल 210 युवा संघ शाखाएं तथा 18000 अधिक युवा संघ सदस्य बन चुके हैं।

सिरिवाल प्रवृत्ति : आचार्य श्री रामेश के प्रतिबोध से मेवाड़ क्षेत्र की हिंसक बावरी जाति का जीवन रूपांतरित हुआ और उन्हें सिरिवाल के रूप में संबोधित किया गया। इन सिरिवाल जाति के लिए श्रीसंघ समता संस्कार पाठशालाओं रोजगार आदि का सृजन किया गया। माध्यम से धार्मिक संस्कार, सर्वधर्मी सहयोग, स्वालंबन,

धन्यवाद
जय हिन्द